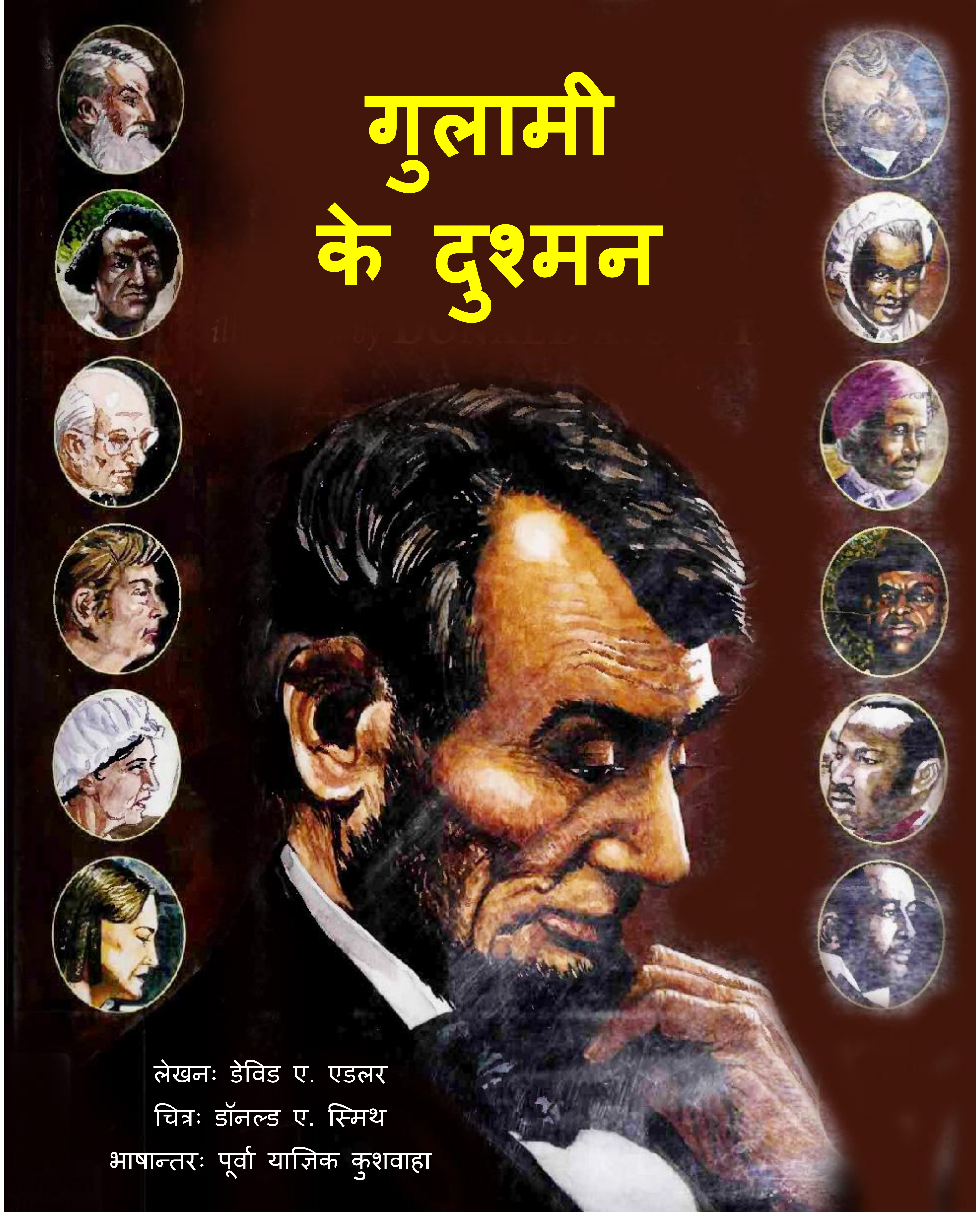
गुलामी के दुश्मन



लेखनः डेविड ए. एडलर
चित्रः डॉनल्ड ए. स्मिथ
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

गुलामी के दुशमन

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः डॉनल्ड ए. स्मिथ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हैरिएट टबमैन एक भगोड़ी गुलाम और अण्डरग्राउण्ड रेलरोड की कन्डक्टर थीं। एलाइजा लवजॉय गुलामी विरोधी अख़बार के प्रकाशक और अभिव्यक्ति की आज़ादी के रखवाले थे। डैनमार्क वैसी, चर्च के नेता व गुलाम विद्रोह के योजनाकार थे। चार्ल्स समनर, अमरीकी सीनेटर व गुलामी विरोधी आंदोलन के पैरोकार थे।

गुलामों के विद्रोह का नेतृत्व करना हो, या गुलामों को शरण देना, या क़िताबों व अख़बारों द्वारा अपनी बात कहनी हो, इस क़िताब में शामिल ये चौदह स्त्री पुरुष गुलामी के युग में आज़ादी के ज़बरदस्त पैरोकार थे। डेविड ए. एडलर की विचलित करने वाली संक्षिप्त जीवनियाँ तथा स्मिथ के सशक्त चित्र उन विविध अमरीकियों को सम्मानित करते हैं जिन्होंने अपनी जान और आज़ादी दाँव पर लगा दी, ताकि दूसरे लोग आज़ाद हो सकें।



गुलामी के दुशमन

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः डॉनल्ड ए. स्मिथ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



जो, जूडी, जैफरी तथा डेविड को

- डी.ए.ए.

मेरी तथा उन सभी को जो इन्सान की आत्मा की परवाह करते हैं

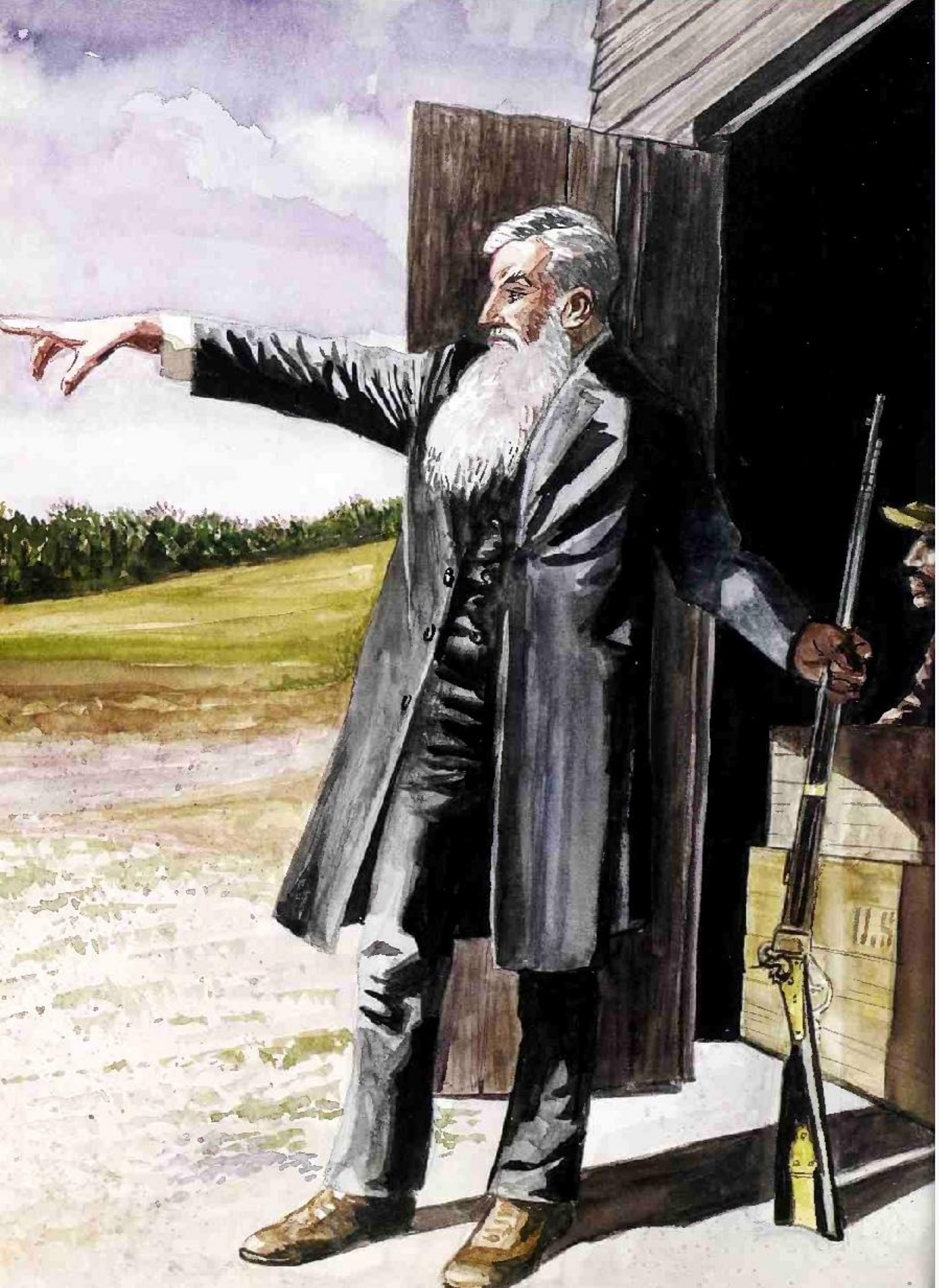
- डी.ए.एस.

इस पुस्तक में जिन 'हीरोस्' को चित्रित किया गया है उनका चयन उनकी बहादुरी और उनकी विविध पृष्ठभूमियों के कारण किया गया है। वे ऐसे लोगों के चन्द उदाहरण हैं जिन्होंने गुलामों की मुक्ति के लिए संघर्ष किया।

ईश्वर अपना चेहरा उस देश पर नहीं चमकाएगा जो गुलामी का साथ देता हो!

- सजर्नर ट्रूथ

अनुक्रम



जॉन ब्राउन

(1800 - 1859)

"मैं जॉन ब्राउन निश्चय के साथ कहता हूँ कि इस अपराधी धरती के पाप खून के सिवा धुल न सकेंगे।"

- ब्राउन का अंतिम कथन, 2 दिसम्बर 1859

जब जॉन ब्राउन बारह साल के थे, उन्होंने एक गुलाम को बेतहाशा पीटे जाते देखा था। उसी पल से उन्होंने गुलामी के ख़िलाफ अपनी जंग छेड़ दी थी। ब्राउन की यह जंग खूनी होने वाली थी।

1856 में उन्होंने पाँच निहत्थे गुलामी के पक्षधर सैटलर्स पर एक हमले का नेतृत्व किया था। दरअसल कैनसास में, जो गुलामी विरोधी शहर था, गुलामी का पक्ष लेने वालों ने हमला किया था, उसका बदला चुकाने के लिए ब्राउन ने इस हमले की योजना बनाई थी। इस घटना के तीन दिन बाद इतवार 16 अक्तूबर 1859 के दिन ब्राउन और उनका साथ देने वालों ने हार्परस् फैरी, वर्जीनिया, स्थित हथियारों के सरकारी ज़खीरे पर धावा किया और काबिज़ हो गए। ब्राउन इन हथियारों से विद्रोह कर गुलामों को छुड़ाना चाहते थे। पर मंगलवार तक वे ज़खीरा और जंग दोनों हार चुके थे।

ब्राउन को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर छोटा मुकदमा चला और उन्हें रस्सी से लटका फांसी की सज़ा दी गई। वह रस्सी उन्हीं गुलामों द्वारा इकट्ठा की गई कपास से बनी थी जिन्हें वे छुड़ाना चाहते थे। जो पंद्रह सौ सैनिक उनको फांसी चढ़ते देखने इकट्ठा हुए थे उनमें जनरल स्टोनवॉल जैकसन और जॉन विल्स बूथ भी थे। बूथ ने 1865 में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की हत्या की थी।

फ्रैडरिक डगलस

(1817 या 1818 - 1895)

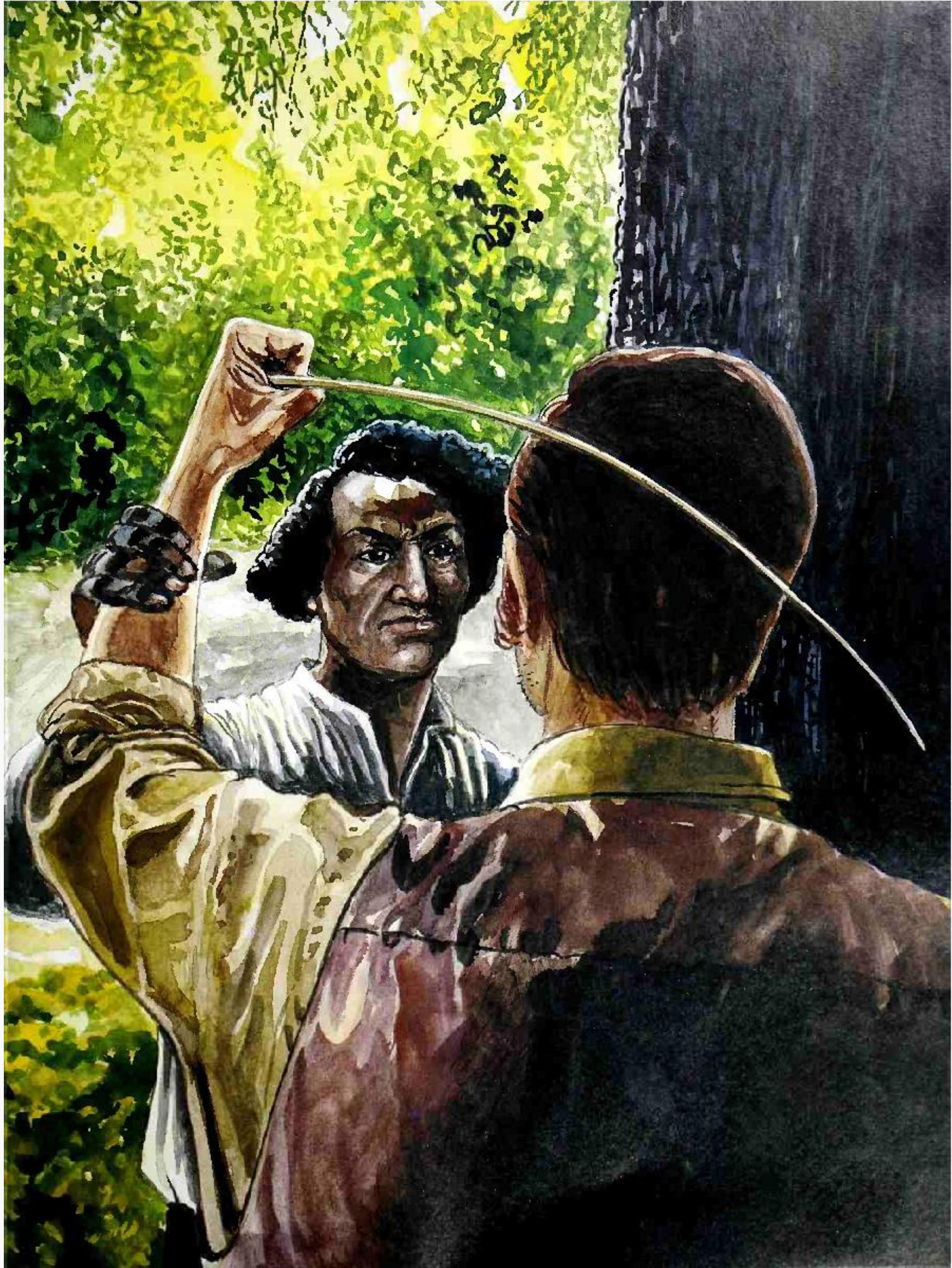
"मुझे अपने अस्तित्व तक पर पछतावा होता था और मैं चाहता था कि मैं मर जाऊँ, सिवा इस उम्मीद के कि शायद मैं आज़ाद हो सकूंगा, मुझे शक नहीं कि मैं खुद को मार डालता।"

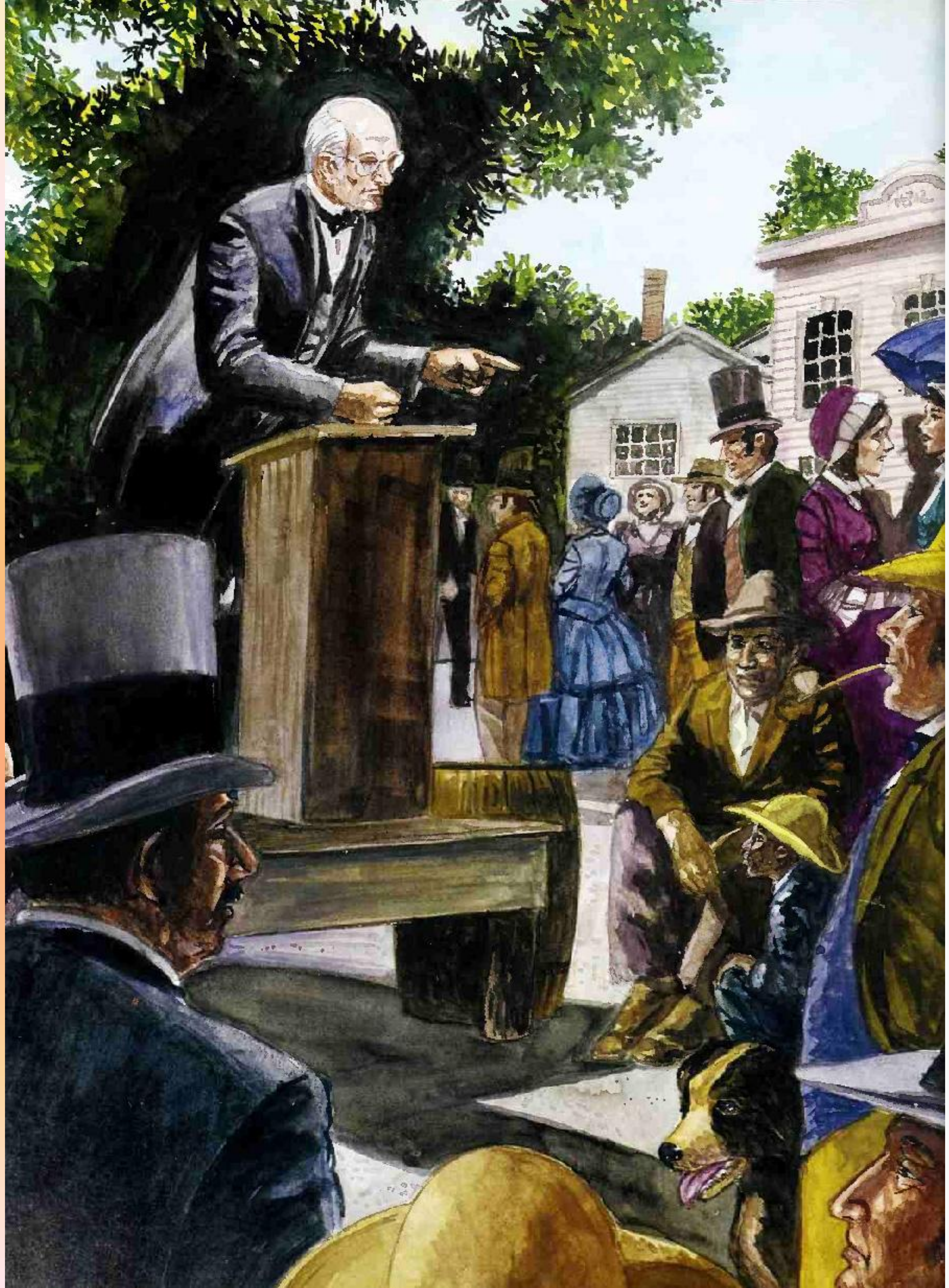
- डगलस की आत्मकथा से, 1845

अपनी आत्मकथा में डगलस ने एडवर्ड कोनी, अपने ज़ालिम मालिक का ज़िक्र किया है जिसने, "मेरे कपड़े फाड़े और मुझ पर तब तक चाबुक बरसाई जब तक चाबुक ही जवाब न दे गई।" कोनी से बचने का कोई उपाय न था। "वह पेड़ के नीचे, ठूंठ के पीछे, और प्लान्टेशन की हर खिड़की के पीछे होता था . . . आजीवन गुलाम बने रहे का खयाल मेरे मन पर भारी पड़ने लगा।"

बाद में डगलस का घर अन्डरग्राउण्ड रेलरोड का एक स्टेशन बना, यानी कई भगोड़े गुलामों के लिए एक सुरक्षित घर। डगलस ने जगह-जगह जा कर गुलामी की बुराइयों पर भाषण दिए। तब अपने एक अख़बार का प्रकाशन शुरु किया। अख़बार का नाम था *नॉर्थ स्टार* । डगलस गुलामी उन्मूलन की एक सशक्त आवाज़ बने।

1852 में रॉचेस्टर, न्यू यॉर्क में अपने भाषण मे डगलस ने कहा, "जहाँ चाहे जाओ, जहाँ चाहे तलाशो, पुरानी दुनिया की राजशाहियों में और तानाशाहियों में घूमो। तुम मेरे साथ यही कहोगे कि घिनौनी बर्बरता और पाखण्ड में अमरीका बिना किसी प्रतिद्वंदी के राज करता है।"





विलियम लॉयड गैरिसन

(1805 - 1879)

"सताए हुए कालों के सभी दुश्मनों को थरथराने दो!"

- गैरिसन के अख़बार *द लिबरेटर* के पहले अंक से, 1831

"उस ईश्वर के नाम पर, जिसने हम सभी इन्सानों को एक ही खून से बनाया है," विलियम लॉयड गैरिसन ने 1847 में बॉस्टन में स्वतंत्रता दिवस के अपने भाषण में कहा, "मैं मांग करता हूँ कि उन सभी को आज़ाद किया जाए जो अमरीका की धरती पर गुलामी तले दबे हुए हैं।"

गैरिसन की मांगे जनवरी 1831 से उनके अख़बार *द लिबरेटर* में लगातार छपती रहीं, जो एक गुलामी विरोधी साप्ताहिक अख़बार था। इसकी स्थापना गैरिसन तथा आइज़ैक नैप ने की थी। "मैं उतना ही कड़वा बनूंगा जितनी कड़वी हकीकत है, और उतना ही समझौता-हीन जितना न्याय होता है," गैरिसन ने अपने पहले अंक में लिखा था। "मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मैं गोलमोल बात नहीं बोलूंगा, मैं माफ़ नहीं करुंगा, और मैं इंच भर भी पीछे नहीं हटूंगा - और मैं सुना जाऊँगा।" उन्होंने गुलामी के लिए कहा था कि, "हमारे पैरों तले एक भूकम्प गड़गड़ा रहा है . . .एक राष्ट्रीय आपदा है . . . मौत और नर्क का एक मिश्रण है।"

गैरिसन का अख़बार भी एक भूकम्प ही था, जो हर सप्ताह आता था। 1865 तक उसकी साप्ताहिक गुहार कायम रही: जब गुलामों को आख़िरकार आज़ाद किया गया।

अब्राहम लिंकन

(1809 - 1865)

"मैं अब्राहम लिंकन आदेश देता हूँ तथा घोषणा करता हूँ कि जिन लोगों को नामित राज्यों में या उनके हिस्सों में गुलाम बना कर रखा गया है, वे अब से आज़ाद होंगे।"

- लिंकन की मुक्ति घोषणा पत्र से जिसमें ऐलान किया गया कि संयुक्त राज्य के सभी भागों में आज़ाद होने के लिए विद्रोह कर रहे गुलामों को आज़ाद किया जाता है, 1 जनवरी, 1863

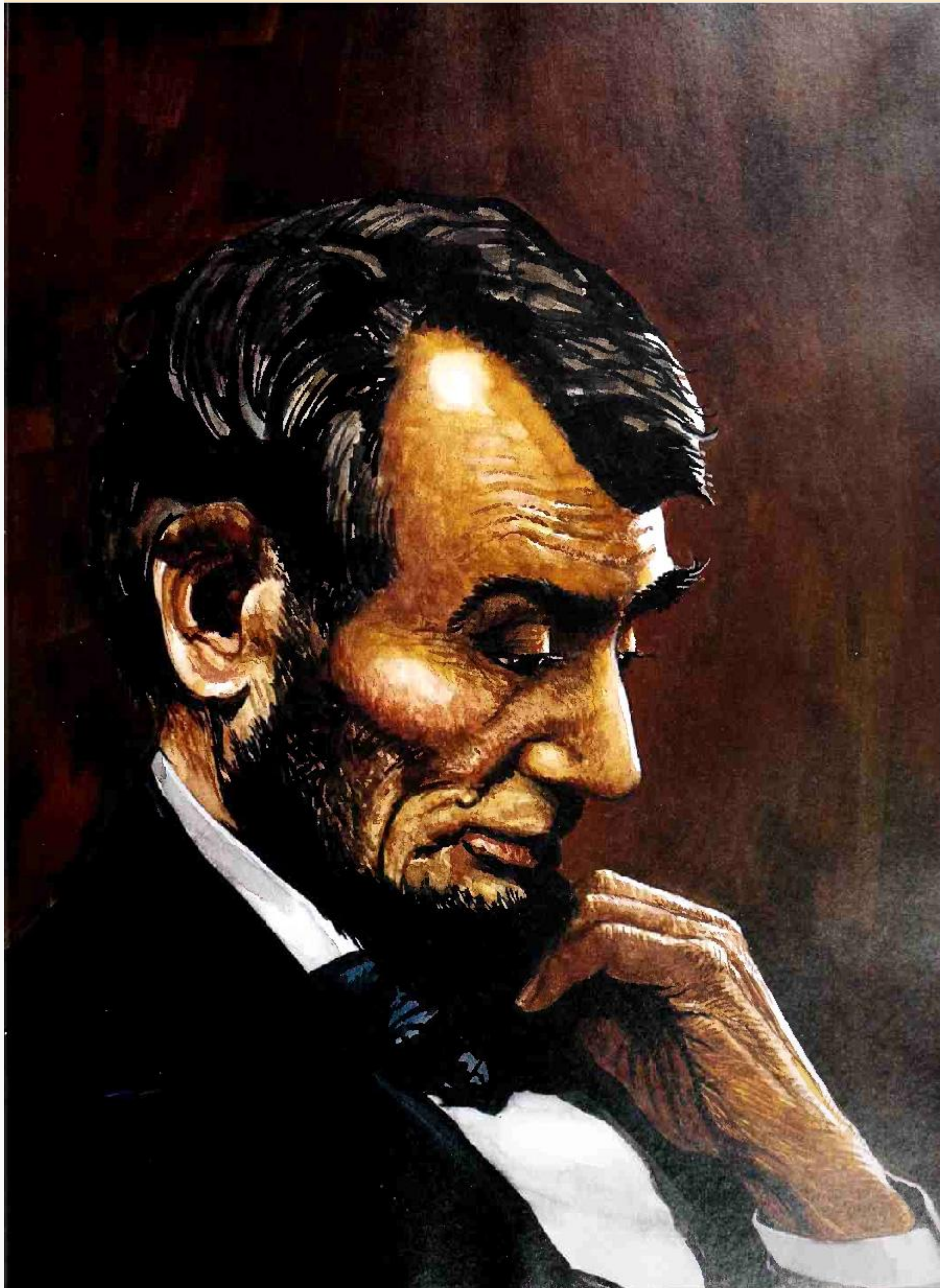
"जो सभा अपने ही विरुद्ध विभाजित हो, वह टिक नहीं सकती," अब्राहम लिंकन ने जून 1858 में कहा था। "मेरा मानना है कि आधी आज़ाद और आधी गुलाम आबादी के साथ यह सरकार स्थाई रूपे से टिक नहीं सकती।"

उस वर्ष लिंकन संयुक्त राज्य की सीनेट के लिए रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार थे। सीनेटर स्टीवन ए. डगलस, जो डैमोक्रैटिक पार्टी के उम्मीदवार थे, उनसे बहस के दौरान लिंकन ने कहा था, "कोई कारण नहीं कि किसी नीग्रो को उन सभी स्वाभाविक अधिकारों को पाने का हक़ न हो, जिनका ज़िक्र आज़ादी के घोषणा पत्र में किया गया है - जीवन का, स्वतंत्रता का, तथा खुशी तलाशने का अधिकार।" लिंकन के इस वक्तव्य ने गुलामों के मालिकों को डरा दिया।

लिंकन 1858 में सीनेट का चुनाव हारे, पर 1860 में उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए चुना गया। उन्हें कई लोग गुलामी का दुश्मन मानते थे। सो उनके चुनाव के बाद दक्षिणी राज्यों की विधान सभाओं ने संघ से अलग होने के पक्ष में मत दिया। उन राज्यों ने 'कॉनन्फिडरेट स्टेटस् ऑफ अमरीका' का गठन किया।

"सार्वभौमिक तथा संवैधानिक नियमों पर विचार कर मैं यह मानता हूँ," लिंकन ने कहा, " कि ये राज्य संघ का हिस्सा हैं" - यानी किसी भी राज्य को अलग होने का अधिकार नहीं है। कई दक्षिणी राज्यों ने इसे जंग का कृत्य माना। एक महीने बाद जंग छिड़ गई। चार अन्य राज्य भी कॉन्फिडरेसी से जुड़े। यह गृहयुद्ध 1865 में कॉन्फिडरेट सेना के समर्पण के साथ समाप्त हुआ।

कॉन्फिडरेसी को हराने के बाद तेरहवाँ संविधान संशोधन पारित किया गया, जिसने गुलामी को ख़त्म किया।



एलाइजा लवजॉय
(1802 - 1837)

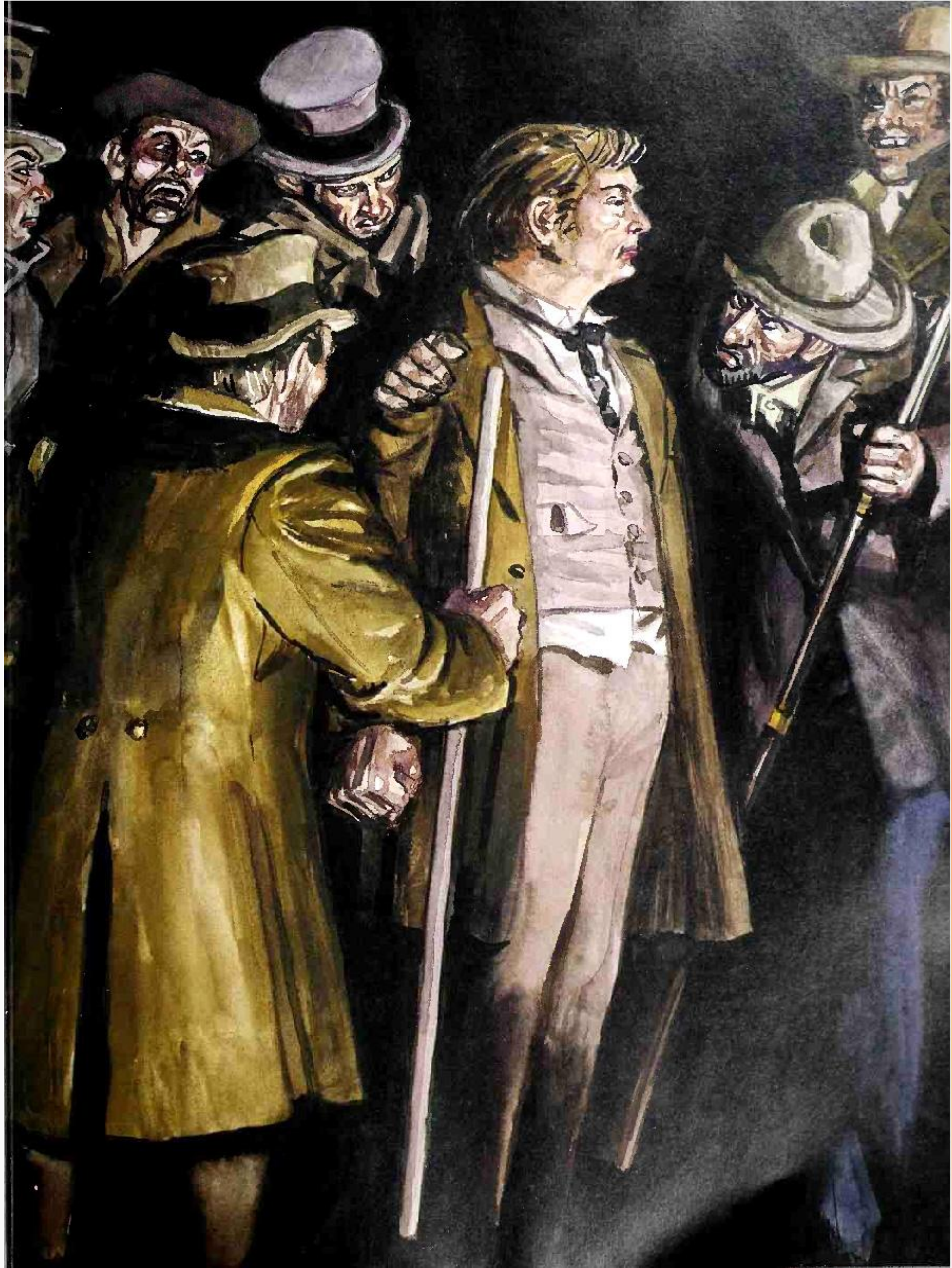
"मैंने चिरकाल तक गुलामी का विरोध करने की शपथ ली है,
और ईश्वर कृपा से मैं कभी पीछे न हटूंगा।"

- एल्टन, इलिनॉइस में जमा भीड़ के सामने
दिए गए लवजॉय के भाषण से, 3 नवंबर 1837

एलाइजा लवजॉय मिसूरी में एक गुलामी विरोधी अख़बार का प्रकाशन करते थे, जहाँ गुलाम रखने की आज़ादी थी। 1836 में जब गुलामी की पक्षधर एक भीड़ ने उनके छापेखाने को तहस-नहस कर डाला, वे मिसिसिपी नदी के दूसरे पार एल्टन, इलिनॉइस में जा बसे। वहाँ गुलामी गैर-कानूनी थी। वे वहाँ से अपना अख़बार छापते रहे। "सच तो यह है," उन्होंने कहा कि "अगर आप इंच भर भी पीछे हटे तो टिके रहने की जगह ही नहीं मिलेगी।"

"मैं जानता हूँ कि आप मुझे सार्वजनिक रूप से यातना दे सकते हैं, सूली पर चढ़ा सकते हैं," उन्होंने एल्टन के एक समूह से कहा, "अगर अधिकारी मेरी रक्षा करने से इन्कार कर दें तो मुझे ईश्वर की ओर देखना पड़ेगा।"

7 नवंबर 1837 के दिन उनके पास एक नई छापा मशीन पहुँची, क्योंकि पिछली तोड़ दी गई थी। उसी रात बीस लोगों ने हमला कर उनकी नई मशीन को नदी में फेंक दिया और एलाइजा लवजॉय की हत्या कर दी।





लुक्रेशिया मॉट

(1811 - 1896)

"युद्ध हमेशा ही भयंकर होता है, पर हमें उम्मीद रखनी चाहिए के वह समझौते के कारण न रुके। क्योंकि युद्ध के रुकने से समाज में असमानता व लाखों बेगुनाह लोगों के अधिकारों तथा आज़ादियों के विरुद्ध जंग जारी रहेगी।

- *नैशनल एन्टी-स्लेवरी स्टैण्डर्ड* में छपे मॉट के पत्र से, 1861

लुक्रेशिया मॉट ने अमेरिकन एन्टी स्लेवरी सोसायटी तथा फिलेडैल्फिया फीमेल एन्टी स्लेवरी सोसायटी के गठन में मदद की थी। एक गुलामी विरोधी सम्मेलन में, जिसे आयोजित करने में उन्होंने मदद की थी, वक्ताओं पर हमला हुआ। उस भवन को ही जला दिया गया जहाँ उन्होंने भाषण दिए थे। पर लुक्रेशिया मॉट ने चुप रहने से इन्कार किया। "अगर हमारे सिद्धान्त सही हैं," उन्होंने कहा, "तो हम कायर क्यों बनें?"

"मैं यह सुन हैरान रह गई जब मिसेज़ मॉट को एक ख़तरनाक महिला कहा गया," एलिज़ाबैथ कैडी स्टेटन ने अपनी मित्र के बारे में कहा। "मुझे बार-बार चेतावनी दी गई कि मैं उनके प्रभाव से बचूं। उन्हें काफ़िर, विधर्मी, और शान्तिभंग करने वाली कहा गया।"

1848 में मॉट व स्टैन्टन ने सेनेका फ़ॉल्स, न्यू यॉर्क में महिला अधिकारों पर एक सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें भावनाओं का घोषणा-पत्र अपनाया गया जिसकी शुरुआत में कहा गया था, "हम इस सत्य को स्वतः सिद्ध मानते हैं कि सभी पुरुषों व महिलाओं को एक समान रचा गया है।" लुक्रेशिया मॉट के लिए इस कथन का अर्थ था - सभी पुरुषों व स्त्रियों, गोरे व काले।

हैरिएट बीचर स्टोव

(1811 - 1896)

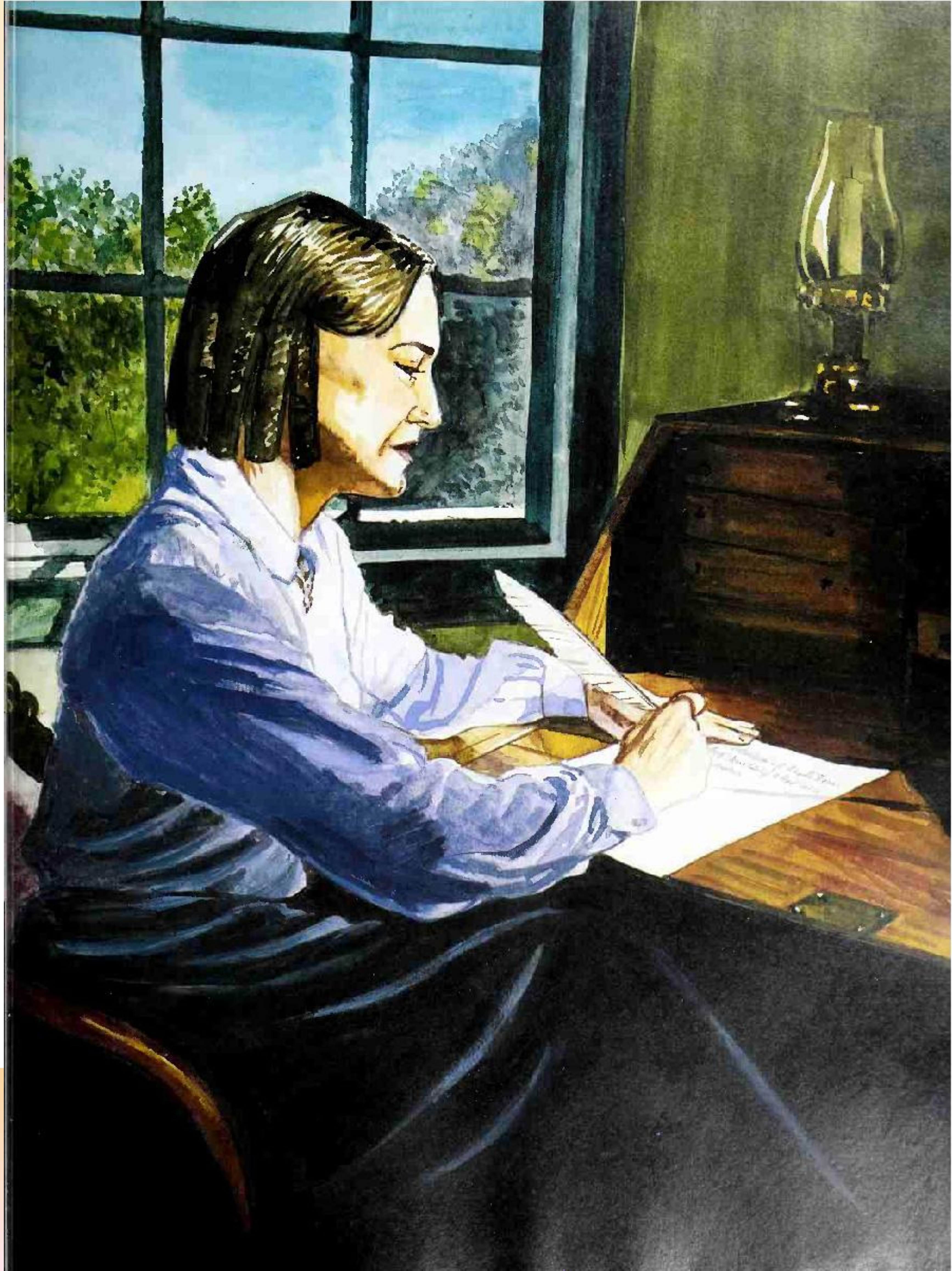
"क्या मैं तेरा मालिक नहीं, क्या मैंने 1,200 डॉलर नकद नहीं चुकाए थे . . .? क्या तेरा शरीर और तेरी रूह मेरी नहीं?"

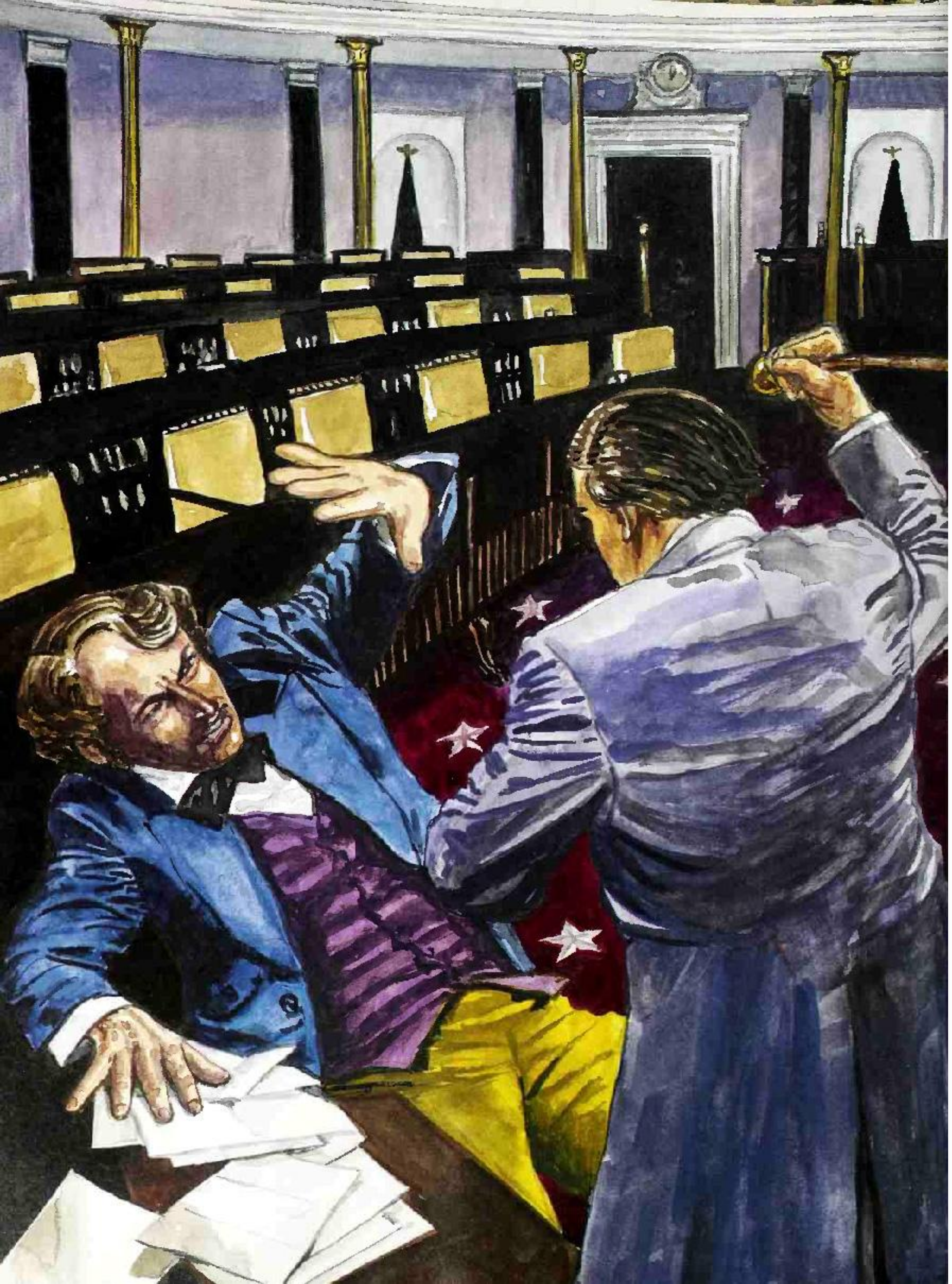
-साइमन लेग्रे, स्टोव के उपन्यास *अंकल टामस् केबिन* में निष्ठुर मालिक का कथन, 1851

1851 में हैरिएट बीचर स्टोव ने वह उपन्यास लिखना शुरू किया जो सामाजिक विरोध की सबसे बेहतरीन रचना *अंकल टॉमस् केबिन* थी। इसमें गुलामी की भयावहता को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने अपने दो छोटे बच्चों को यह उपन्यास पढ़ कर सुनाया और वे रो पड़े थे।

अंकल टॉमस् केबिन एक-एक अध्याय के रूप में पहले एक साप्ताहिक पत्रिका में छपा। 1852 में उसे पुस्तक के रूप में छापा गया। जल्द ही आठ छपाई मशीनें दिन-रात चलती रहीं ताकि पुस्तक की मांग पूरी की जा सके। बाद में इस पुस्तक का अनुवाद तीस भाषाओं में किया गया।

स्टोव के उपन्यास ने गुलामी के विरोध की भावना को इस कदर भड़काया कि उसे गृहयुद्ध के एक कारण के रूप में सूचीबद्ध किया गया। राष्ट्रपति लिंकन ने भी यह स्वीकारा। 1862 में जब स्टोव लिंकन से मिलीं, लिंकन ने कहा, "आप वही छोटी-सी महिला हैं, जिसने एक बड़ी जंग को अंजाम दिया।"





चार्ल्स समनर

(1811 - 1874)

जहाँ गुलामी है वहाँ आज़ादी नहीं हो सकती। जहाँ आज़ादी है वहाँ गुलामी नहीं हो सकती है।"

- कांग्रेस के समक्ष दिए समनर के भाषण से, 1864

मैसाच्युसैटस् के सीनेटर चार्ल्स समनर विलक्षण वक्ता व कांग्रेस में गुलामी विरोधी आंदोलन के नेता थे। "सब कुछ कानून के अनुसार होता है," उन्होंने गुलामी की भर्त्सना करते हुए कहा कि गुलाम को "एक खच्चर की तरह दागा जाता है, बैल की तरह जोता जाता है, कुत्ते की तरह अपंग बनाया जाता है, और लगातार बेरहमी से पीटा जाता है।" उन्होंने कहा कि गुलामी "एक पाप . . . एक राष्ट्रीय अभिशाप है।"

वे गुलामी का पक्ष लेने वाले अपने सहकर्मियों से सख़्ती से पेश आते थे। 1856 में उनके एक ज़बरदस्त भाषण के बाद दक्षिण कैरोलाइना के हाउस ऑफ रेप्रेज़ेन्टेटिव का एक सदस्य सीनेट में घुस आया। उसने अपनी छड़ी से समनर के सिर पर तब तक वार किए, जब तक वे लहुलुहान और बेहोश हो फर्श पर न गिर पड़े।

समनर को स्वस्थ होने में तीन वर्ष लगे। मैसाच्युसैटस् के लोगों ने उनकी बहादुरी को सम्मानित करने के लिए उनकी सीट इस दौरान खाली रखी। 1859 में वे वापस लौटे और उन्होंने चार घंटे का एक भाषण 'गुलामी की बर्बरता' पर दिया। यह स्पष्ट संकेत था कि वे डर कर मौन नहीं रहेंगे।

सजर्नर ट्रूथ

(1797 -1883)

करती हूँ विनती अपने लोगों के लिए,
जो गरीबों और पददलित लोगों की है कौम,
वे ऐसे देश में रहते हैं जो हाँकता है डींग आज़ादी की,
बिना एक स्थाई ठौर के . . .
शरीर पर हैं मेरे अनेकों दाग़,
पीठ पर पड़े कोड़ों के हैं निशान,
करती हूँ विनती अपने लोगों के लिए,
जो चाबुक तले कराह रहे हैं।
- 1850 की बैठक में ट्रूथ द्वारा लिखे व सुनाए गए भजनों में से।

सजर्नर ट्रूथ 1826 में अपनी आज़ादी हासिल करने भागी थीं। गुलामी ने उनके परिवार के साथ जो कछ किया था उससे उन्हें नफ़रत थी।

1843 में ट्रूथ ने न्यू यॉर्क छोड़ा और पश्चिम गईं। वे हज़ारों मील पैदल चलीं, कई राज्यों से गुज़रीं। वे जहाँ भी गईं वहाँ वे गुलामी के विरोध में और महिलाओं के अधिकारों के पक्ष में बोलीं।

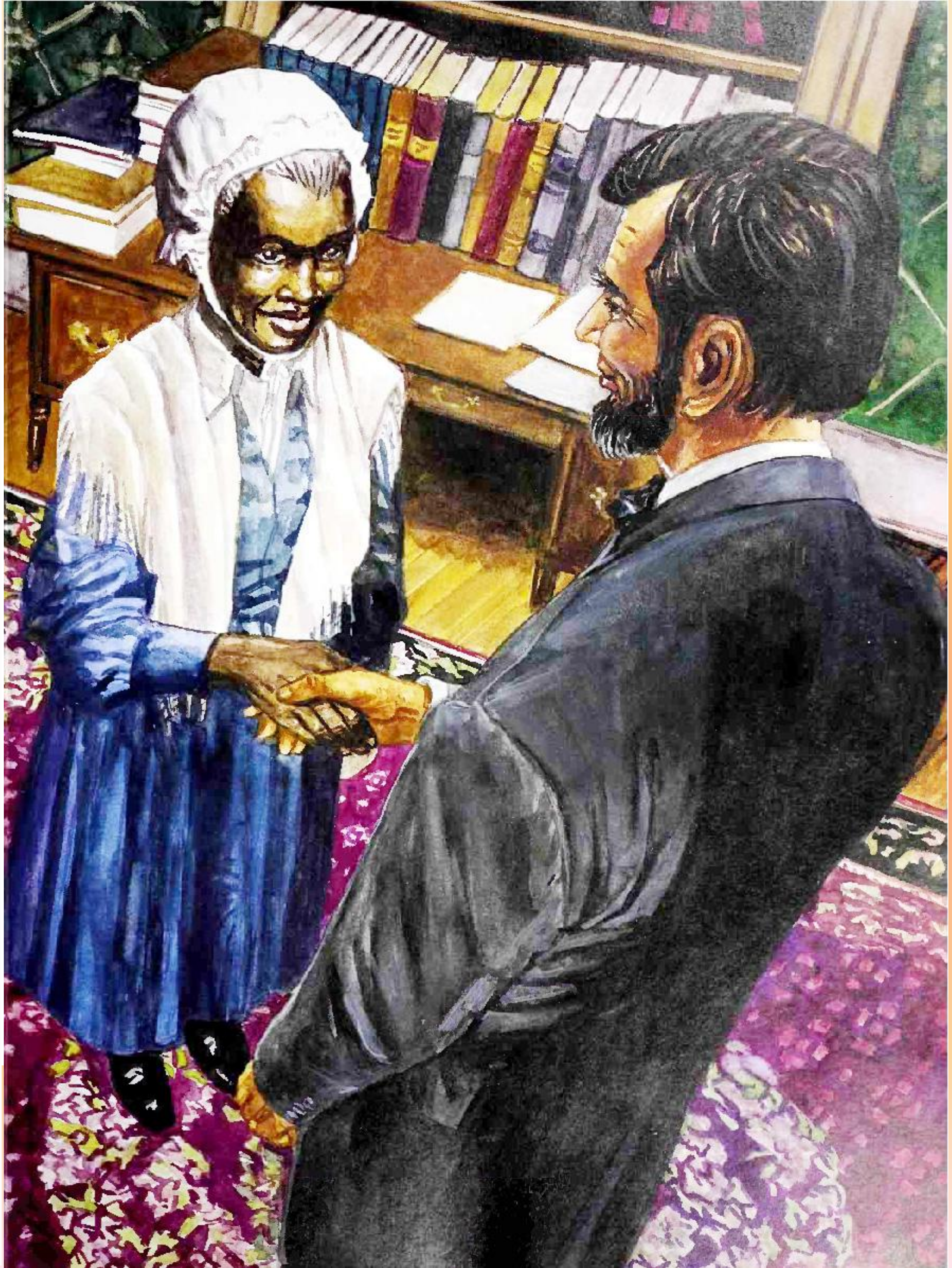
"क्या आप सोचती हैं कि आप गुलामी के विरोध में जो बोलती हैं उससे कोई फ़ायदा होता है?" एक श्रोता ने उनसे पूछा। "मुझे आपके भाषण की उतनी भी परवाह नहीं जितनी किसी मच्छर के काटने की।" ट्रूथ ने जवाब दिया, "भगवान करे मैं आपको मच्छर की तरह खुजली करने पर मजबूर करती रहूँ।"

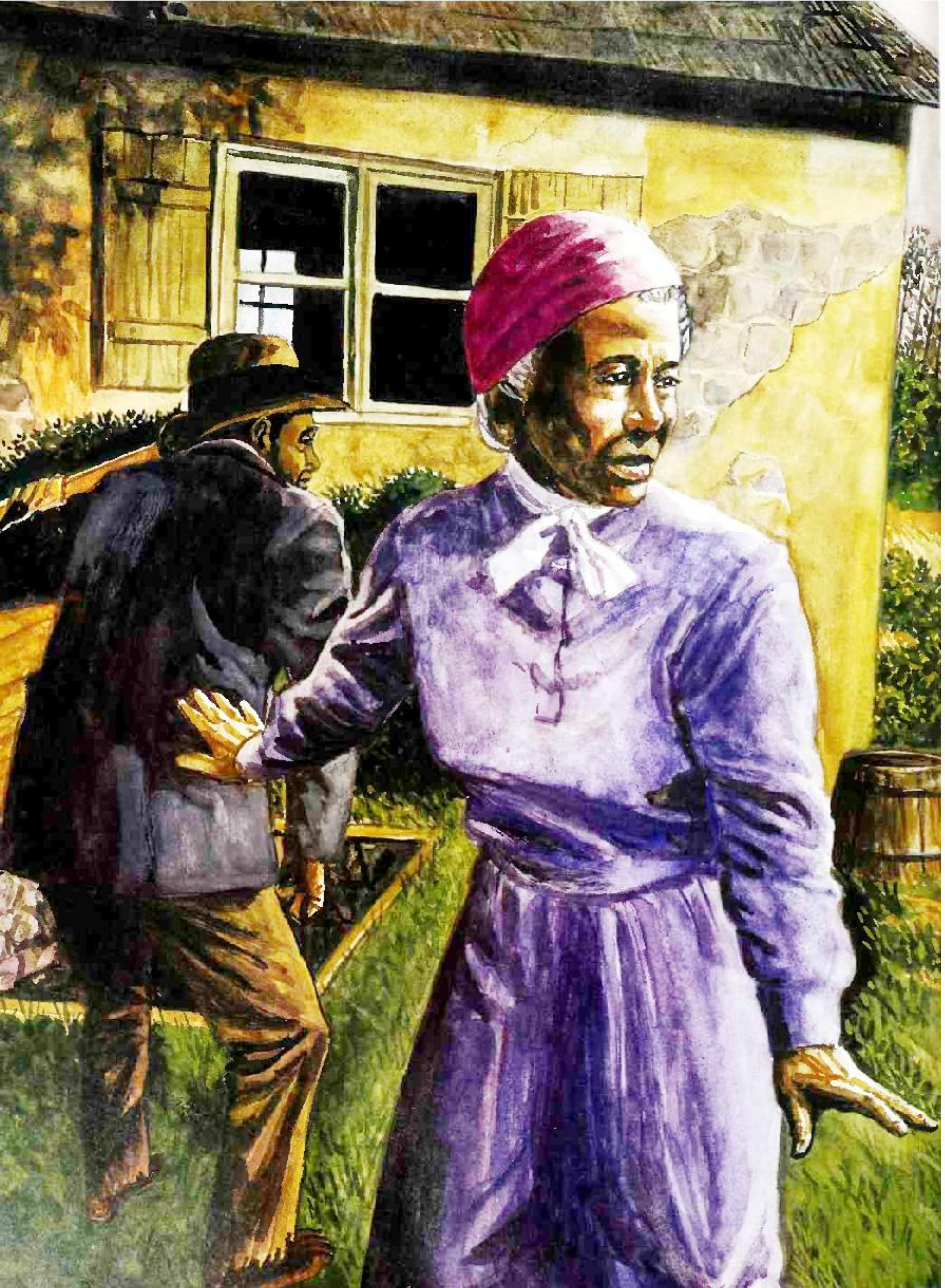
"अमरीकियों, मैं आपको आज़ादी की डींग मारते सुनती हूँ," उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा। "आपका दावा है कि सभी पुरुष एक-समान रचे गए हैं . . . पाखंडियों! झूठे! . . . अपनी विशाल आबादी के छठे भाग को पाशविक दासता में धकेलने वालों!"

1864 में ट्रूथ राष्ट्रपति लिंकन से मिलीं और उनसे कहा, "मैंने आपके राष्ट्रपति बनने से पहले आपके बारे में सुना ही नहीं था।"

"ख़ैर, मैंने आपके बारे मे सुना था," लिंकन ने जवाब दिया, "राष्ट्रपति बनने का ख़याल मुझे सूझा उसके भी सालों-साल पहले।"

समूचे संयुक्त राज्य ने सजर्नर ट्रूथ के बारे में सुना था। उन्होंने कई लोगों को उन्मूलन की बात कर खुजली करवाई थी।





हैरिएट टबमैन

(1820 - 1913)

"मैं सिर्फ़ एक ही बार मर सकती हूँ।"

टबमैन ने यह संभवतः 1860 के दशक में दिए गए एक साक्षात्कार में अण्डरग्राउण्ड रेलरोड से कई बार जोखिम उठाने की बात याद करते हुए कहा था।

"मुझे आज़ादी या मौत का हक है," भूतपूर्व गुलाम हरिएट टबमैन ने एक बार कहा था। "अगर मुझे एक नहीं मिल सकता तो मैं दूसरे को चुनती!"

1849 में टबमैन अपने मालिक की जायदाद से से भाग कर एक गोरी महिला के घर गई। उन्हें पता था कि वह स्त्री गुलामी से नफरत करते है। इसके बाद वह एक सुरक्षित घर से दूसरे में पनाह लेती रहीं। उन्होंने अण्डरग्राउण्ड रेलरोड से सफ़र किया। "मैने सीमा पार कर ली। मैं आज़ाद थी।" पर टबमैन के माता-पिता, बहनें, भाई और दोस्त अब भी गुलाम थे। उन्होंने तय किया कि "उन्हें भी आज़ाद होना चाहिए। मैं उत्तर में एक घर बनाऊँगी और उन सबको वहीं लाऊँगी।"

सो हैरिएट टबमैन वापस दक्षिण लौटीं। उन्होंने अपनी जान दाँव पर लगाई। वे अण्डरग्राउण्ड रेलरोड की 'कन्डक्टर' बन गईं।

टबमैन ने अपनी यात्राएं सर्दियों में कीं, जब रातें लम्बी होती थीं और लोग अधिकतर अपने घरों में दुबके होते थे। तारों से दिशा बूझते हुए उन्होंने तीन सौ से भी अधिक ग़लामों की मदद की। उनमें से कुछ आगे बढ़ने से डरते, टबमैन उनकी कनपटी पर बन्दूक रखतीं और वे आगे बढ़ जाते। सालों बाद उन्होंने फ़क्र से कहा, "मैंने अपनी रेलगाड़ी कभी पटरी से नहीं उतरने दी। मैंने एक भी सवारी नहीं खोई।"

नैट टर्नर

(1800 - 1831)

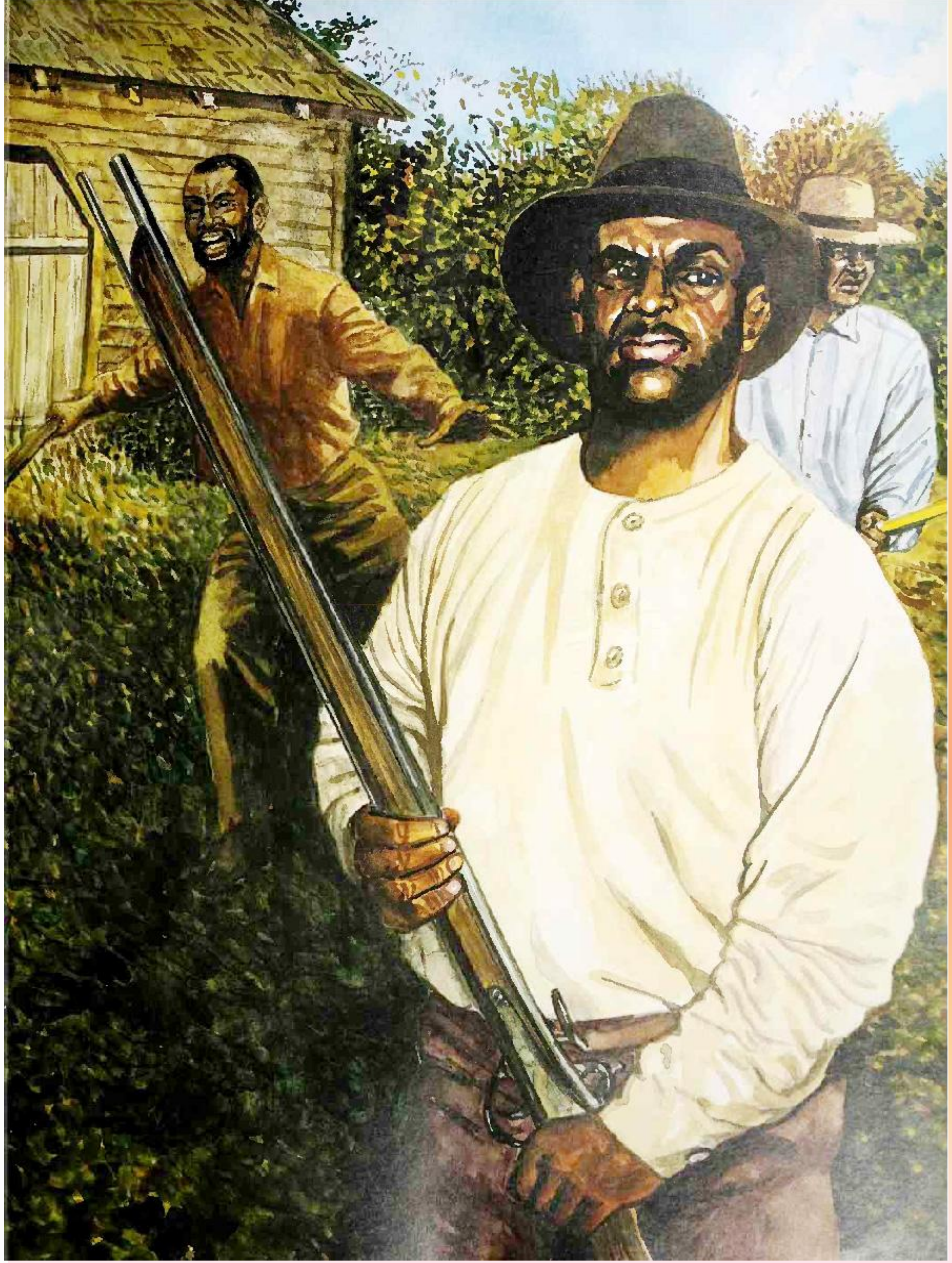
"मैं यहाँ जंज़ीरों से जकड़ा खड़ा हूँ और किस्मत जो भी लाए उसे भुगतने को तैयार हूँ।"

- फांसी चढ़ने के कुछ ही पहले टर्नर का दिया वक्तव्य, 1831

जब टर्नर बच्चे थे उन्हें लगता था कि उनका जन्म किसी महान उद्देश्य के लिए हुआ है। उन्हें सपने में "गोरी व काली आत्माएं एक-दूसरे से लड़ती-भिड़ती नज़र आती थीं। तब अचानक सूरज छिप जाता और आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट होती, खून की धराएं बहतीं . . . और स्वर्ग के संकेत मुझे बताते कि मुझे एक महान काम शुरू करना है।"

21 अगस्त 1831 को सूर्यग्रहण था। इसी दिन टर्नर ने अपना महान काम किया जो गुलामों का विद्रोह था। उन्होंने अपने सात गुलाम साथियों के साथ अपने मालिक के घर हमला किया और पूरे परिवार की हत्या कर दी, तब वहाँ से बन्दूकें ले वे आगे बढ़े। उनकी यह जंग तब फैली जब दूसरे ग़लाम भी इस विद्रोह में आ जुड़े। दूसरे दिन, जब पचास से भी अधिक गोरों की हत्या हो चुकी थी, विद्रोहियों को सेना की एक बड़ी टुकड़ी ने शिकस्त दी। सौ से भी ज़्यादा गुलाम मारे गए, उनमें से कुछ का विद्रोह से कोई वास्ता तक न था। टर्नर कई सप्ताह बाद पकड़े गए और उन्हें फांसी दी गई। उन पर चले मुकदमे में न्यायाधीश ने कहा, "तुम्हारी अगर कोई उम्मीद है तो वह अगली दुनिया में पूरी होगी," तब यह सज़ा सुनाई कि टर्नर को गरदन से तब तक लटकाया जाए "जब तक तुम मर, मर, मर न जाओ!"

इस विद्रोह ने समूचे दक्षिण को झकझोर दिया। इसने इस भ्रम को तोड़ दिया कि काले गुलाम अपनी आज़ादी के लिए नहीं लड़ेंगे।





डैनमार्क वैसी

(1776? - 1822)

गोरों ने जो आज़ादी जीती है उसकी आधी चमक खो जाएगी . . . जिसे खुद को आज़ाद करना है, उसे वार भी करना होगा। आज़ादी में मर जाना गुलाम की तरह जीने से कहीं बेहतर है . . . चार्ल्सटन के डैनमार्क वैसी को याद करो।''

- 1863 में रॉचैस्टर, न्यू यॉर्क में दिए गए फ्रैडरिक डगलस के भाषण से

1800 में डैनमार्क वैसी ने एक लॉटरी जीती और उस से अपनी आज़ादी ख़रीद ली। तब चार्ल्सटन, दक्षिणी कैरोलाइना में एक बढ़ई की दुकान खोली। बाद में वे अपने गिरजे के नेता बने। वे अक्सर बाईबल से उद्धरण दिया करते थे। ''वह जो आदमी को चुराता है, उसे बेचता है, या उसके पास पाया जाता है, उसकी हत्या कर देनी चाहिए।''

पर केवल भाषण देना डैनमार्क वैसी के लिए पर्याप्त नहीं था।

वैसी ने जुलाई 1822 के दूसरे सोमवार को एक विद्रोह की योजना बनाई। कुछ रिपोर्टों के अनुसार कई हज़ार गुलामों ने छुरे, तलवारें बनाईं, छद्मवेश धरे और निकल भागने की तैयारी की। पर उनके साथ धोखा हुआ, उनकी योजना की ख़बर अधिकारियों को दे दी गई। वैसी और 130 अन्य कालों को गिरफ्तार कर लिया गया। डैनमार्क वैसी समेत पैंतीस लोगों को फांसी दी गई।

डेविड वॉकर

(1785 - 1838)

"अमरीकावासी कहते हैं कि हम अहसान फ़रामोश हैं। ईश्वर के लिए, उनसे जरा पूछो कि प्रति हम क्यों अहसानमन्द हों.. हमारे माताओं-पिताओं की हत्या करने के लिए? . . . हमारे हाथों में हथकड़ियाँ और पैरों में जंज़ीरें बांधने के लिए, हमें तपते निशानों से दागने के लिए, हमारे हलक में अंगारे ठूंसने के लिए, या हमें गुलामी में जीने को मजबूर करने के लिए?"

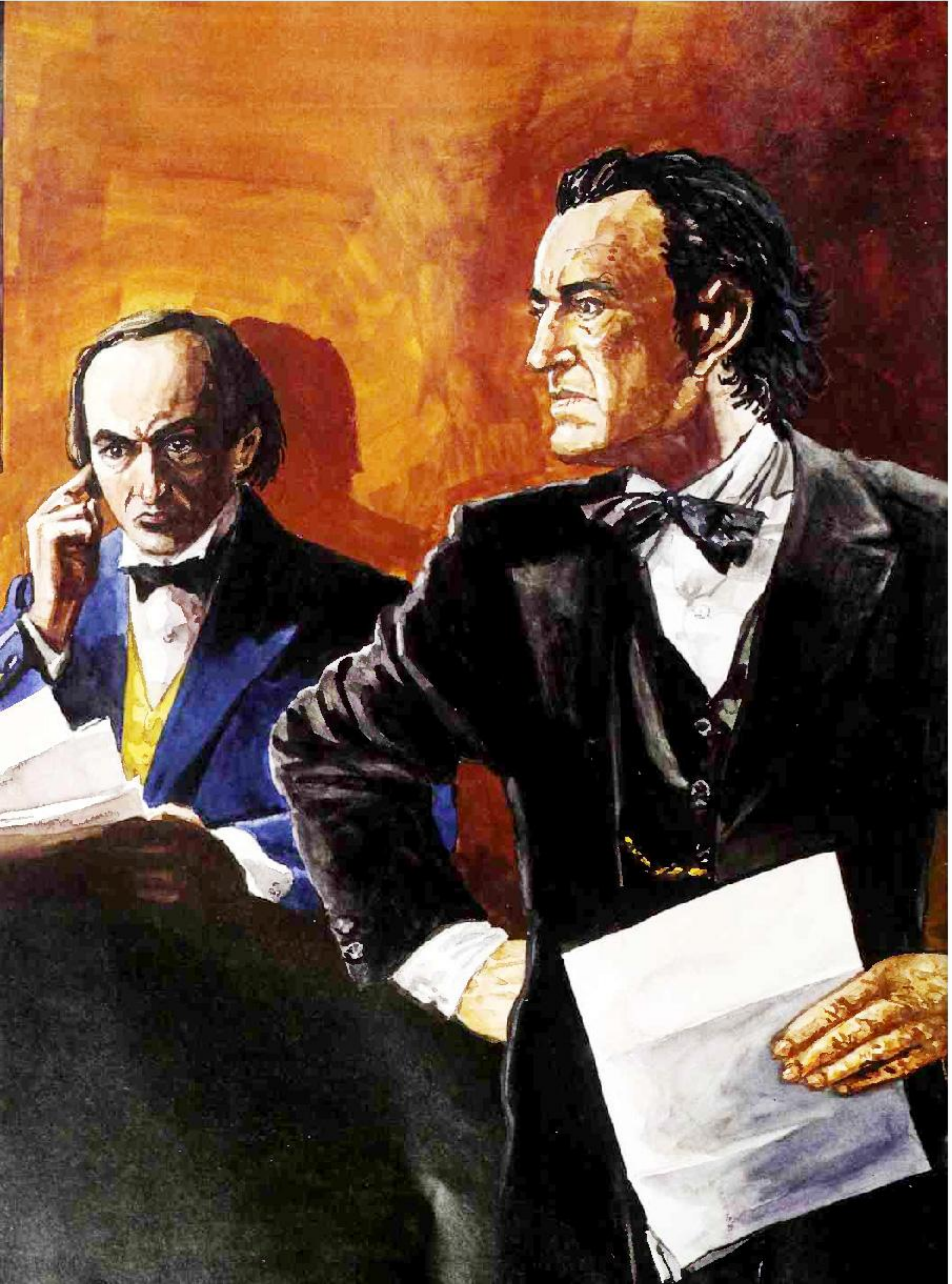
- वॉकर की अपील, अनुच्छेद चार में, 1819

डेविड वॉकर एक काले व्यक्ति थे जो उत्तरी कैरोलाइना में आज़ाद पैदा हुए थे। उन्होंने यात्राएं कीं, कई जगहें देखीं, कई लोगों से मिले, और तब लिखा - "जब से दुनिया की शुरुआत हुई तब से ही उस पर जीने वाले गुलाम सबसे अपमानित, दुखी व हतोत्साहित जीव रहे हैं।" वॉकर बॉस्टन जा बसे, जहाँ वे कपड़े बेचने का धंधा करने लगे और गुलामी खत्म करने के लिए लोगों को उकसाने लगे।

1829 में वॉकर ने एक कितबिया लिखी जिसमें उन्होंने घोषणा की, "अमरीका गोरों की बनिस्बत हमारा देश अधिक है।" गोरों के बारे में उन्होंने लिखा, "शोक, तुम तब शोक करोगे, अगर हमें अपनी आज़ादी लड़ कर लेनी पड़े।"

वॉकर अमरीका व खुद अपने लिए भी नाउम्मीदी से भर चुके थे। "अगर मैं इस खूनी धरा पर रहा," उन्होंने कहा, "मैं अधिक जी न सकूंगा।" और वे जिए भी नहीं। जून 1830 में एक दिन उन्हें मृत पाया गया। उनके सिर की कीमत का ऐलान पहले ही कर दिया गया था। उनके समर्थकों का मानना था कि उन्हें ज़हर दे मार डाला गया था।





थियोडोर ड्वाइट वैल्ड

(1803 - 1895)

"धरती पर कोई इन्सान नहीं जो यह मानता न हो कि गुलामी एक श्राप है।"

- वैल्ड की रचना *स्लेवरी एज़ इट इज़* से, 1839

"हरेक इन्सान जानता है कि गुलामी एक श्राप है," थियोडोर वैल्ड ने अपनी पत्नी के साथ लिखे अपने 1839 के पैम्फलैट की प्रस्तावना में लिखा था। "जो भी इस बात को नकारे, उस पर मुकदमा चलाया जाए, उसके कानों के पास जंज़ीरे खनका, उससे कहा जाए कि ये तुम्हारे लिए हैं। उसे बस एक घंटा दिया जाए ताकि वह अपनी पत्नी और बच्चों को गुलाम की ज़िन्दगी के लिए तैयार कर सके। उनसे कहा जाए कि वे सब अपनी गरदनों को जुतने के लिए और कलाइयों को हथकड़ियों के लिए तैयार कर लें। और तब उनके ज़र्द होठों को और कांपते घुटनों को देखा। तुम्हें गुलामी के ख़िलाफ प्रकृति की गवाही मिल जाएगी।"

वैल्ड की पत्नी एंजलीना ग्रिम्के थीं। एंजलीना तथा उनकी बड़ी बहन सारा दक्षिण की पहली स्त्रियाँ थीं जिन्हें अमरीका की अग्रणी उन्मूलनवादियों में शुमार किया जाता है। वैल्ड तथा ग्रिम्के बहनों ने उन्मूलनवादियों को प्रशिक्षित किया ताकि वे यह संदेश देश भर में फैला सकें। "गुलामी," एंजलीना ग्रिम्के के शब्दों में, "प्रकृति की स्वाभाविक व्यवस्था का उल्लंघन है। कोई भी मानवीय ताकत इसे अधिक समय तक जारी नहीं रहने दे सकती।"